नवम्बर २०१३

TODAY

(यूराशिया रेयूकाई का समाचार-पत्र)

वर्ष-१ अंक-५

महागुरु काकुतारो कुबो जी के ७० वें पुण्यतिथि समारोह मे १८ नवम्बर २०१३ को मिहाता शाखा एवं संस्कृति केन्द्रों में सदस्यों के साथ-साथ सहभागी होने का मौका पाने के लिए कृतज्ञ होकर कोसिस करें ।

यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष जी द्वारा २१वीं शाखा भारत के पत्थरझोडा क्षेत्र में २७ अक्टूबर २०१३ के दिन प्रदान किए गए मार्गनिर्देशन के अंश:

आप सभी को नमस्कार !

रेयूकाई शिक्षा के साथ कर्म का सम्बन्ध रहकर आपलोगों के साथ-साथ रेयूकाई शिक्षा का कार्यान्वयन होने वाले इस स्थान में आकर अभ्यास करने का मौका प्राप्त किया । इस मौके के लिए एकदम आंतरिक अभार व्यक्त करता हूँ । आज से करीब ३९ वर्ष पहले भारत के नयी दिल्ली में कर्म का सम्बन्ध रहने वाले मेरे क्रियान्वयन की जा रही इस रेयूकाई शिक्षा को भारत देश में प्रवाह कर इसे विश्व भर की आत्मा को परिवर्तन करते जाने का नेतृत्व ले सकने वाला देश बनाने की सोच लेकर अभ्यास के अपूर्ण होने पर भी सदस्य बनाऊंगा, इस विचार से यहां आने का मौका प्राप्त किया था । उस समय मैं जवान था और फुर्तीला भी । आज ८१ वर्ष का वृद्ध व्यक्ति हो चुका हूँ लेकिन मेरी आत्मा ३९ वर्ष की है ।

रेयूकाई शिक्षा कहने पर यह कोई धर्म नहीं है । आप सभी के अपने-अपने धर्म होंगे । यह आप सब की निजी बात है । आप अपने माता-पिता से प्राप्त हुए उस धर्म का उसी तरह से पालन करें । हम मनुष्य के रुप में जन्म लेकर आए हुए हैं । हमें मनुष्य के रुप में ही कार्य करने होंगे । कुत्ते, गाय जैसे जानवर केवल खाने के लिए जन्म लेते हैं । सुबह से लेकर शाम तक केवल खाया करते हैं । खाना देने पर धन्यवाद नहीं देते, फिर और मिलने से अच्छा होता, इस प्रकार के होते हैं । लेकिन मनुष्य वैसा नहीं होता । इसलिए रेयूकाई में हम क्यों मनुष्य के रुप में जन्म लेकर आए हैं, इसके श्रोत जानना जरुरी है । इस श्रोत का पता लगाकर उसका कार्यान्वय करने वाली यह रेयूकाई शिक्षा है । इस रेयूकाई शिक्षा को काकुतारो कुबोजी नामक व्यक्ति ने प्रतिपादित किया था । आप सभी सूत्रपाठ कर रहे हैं कि नहीं, वह हमे पता नहीं चला । जो पाठ कर रह हैं उन्हे पता होगा कि उसमें एक से पांच तक प्रायश्चित अभ्यास लिखा गया है । रेयूकाई की शिक्षा का आधार कहने पर कृतज्ञता है । इसे केवल मुख से धन्यवाद मात्र न कहकर हमेशा मन में इस तरह की भावना होनी चाहिए । मनुष्य अकेले बच नहीं सकता । सभी बातों को लेकर स्वयं बचता हैं । हवा भी उसी तरह है । उसे हम आंखों से देख भी नहीं सकते लेकिन उसके नहीं होने पर हम बच भी नहीं सकते । पांचवें प्रायश्चित की बात गंभीर हेतुफल के सिद्धान्त में विश्वास करने की बात कही गयी है । इस आंखों से नहीं दिखने वाले धागे के साथ हम जुडे हुए हैं ।

आज आपलोगों कई घंटों की दूरी से यहां आए हुए हैं । आपलोगों को यहां से कुछ न कुछ बात सीखकर अपने स्थान पर जाकर अपने में परिवर्तन लाना पडेगा । पूर्वजों से अच्छी और बुरी, दोनों तरह की बातें हममे आयी

साधारणतया कहा जाता है कि हम एक पुस्त लांघने के बाद मिलते हैं । जैसे हम पिता से नहीं मिलने पर दादा के साथ मिलते हैं तथा अपने बेटे से ज्यादा अपने नाती से हम मिलते हैं । अच्छी बातें और बुरी बातें दोनों हमारे अंदर हैं और इसे हम कर्म का सम्बन्ध कहते हैं । अच्छा भी है, बुरा भी है । जिस तरह बिजली आंखों से दिखाई नहीं पडती । लाइट जलने पर बिजली के आने का पता चलता है । बुझने पर बिजली के चले जाने का पता चलता है । उसी तरह आपलोग अपनी आत्मा को स्वयं देख नही सकते । आंखों से दिखाई नहीं पडने पर भी आत्मा परिचालित हुई, ऐसा चेहरे से पता चलता हैं, बिजली की तरह । महिलाएं भी उसी प्रकार हैं । बुरे शब्दों का प्रयोग किया तो आत्मा से विरोध करती हैं और चेहरे पर भी उसी तरह का भाव दिखाई पडता है ।

रेयूकाई शिक्षा कर्म के शुद्धिकरण की शिक्षा हैं, आत्माका विकास करने वाली शिक्षा है । अभी थोडी देर पहले किसी ने मन का विकास कहा था । आप अपनी प्रतिभा में परिवर्तन करते जाएं । बुराई की ओर नहीं बल्कि अच्छाई की ओर परिवर्तन करते जाएं । मन कहने पर परिचालित होता है । जापान में महिलाओं के मन को शरद के महीने का आकाश कहा जाता है । क्यों कि शरद माह में यह क्षण-क्षण में बदलता रहता है । कहा जाता है कि महिलाओं का मन परिवर्तन करना आसान होता है । भारत में शायद वैसा प्रचलन नहीं होगा । उसी प्रकार यह मन की क्रियाशीलता नामक शब्द से निकलता है, व्यवहार में दिखाई पडता है । इसे परिवर्तन करना पडता है । मन सभी का होता है । उसके बीच आत्मा होती है । आत्मा को नहीं परिवर्तन करने तक मन को परिवर्तित नहीं किया जा सकता ।

यहां यूराशिया रेयूकाई का मार्क है । आज से और अभी से आपलोगों को यहा मार्क बनना पडेगा । मार्क के विषय में यह जो सादा भाग है, उसके बीच में लाल सर्कल है, वह भाग मैं आत्मा का विकास कर रहा हूँ, कह रहा है । और सादा कमल जो है, वह आपलोग हैं । कमल गंदे पानी में खिलता है । साफ पानी में यह खिल नहीं सकता । गंदे पानी मे कमल खिलता हैं, आज का हमारा संसार गंदे पानी की तरह है । इस बुरे संसार से आपलोग इस सफेद कमल की तरह खिलकर औरों को आशा देने, उत्साह देने वाले व्यक्ति हैं । आपलोग इस मार्क को उस प्रकार लें । कमल की एक पंखुडी नीचे गिरी हुई है । आपलोग एक-एक जन आत्मा का विकास करते हुए परिवर्तन लाते हुए औरों में भी परिवर्तन करते जाएं और सुखी संसार बनाएं, आएं कहते हुए हाथ दिए होने का स्वरुप है और बाहर की ओर रहने वाला ही यूराशिया रेयूकाई है ।

सामूहिक फोटो

खुशी का अनुभव

नाम : श्रीमती उन्नति खाती
उपाधि : जुन-होजाशु
मिहाता शाखा : यूराशिया रेयूकाई १७वीं शाखा
क्षेत्र : सिद्धार्थनगर

सभी को नमस्कार,

मेरो नाम उन्नति खाती है। मुझे इस पवित्र संस्था में प्रवेश कराने वाली मेरी ओया शिबुचो सुश्री रुपमा हिराचन हैं। मैं आज से २१ वर्ष पहले इस पवित्र संस्था में प्रवेश पाने का मौका प्राप्त की थी। उस समय रेयूकाई का अपना भवन नहीं था। २१ वर्ष पहले प्रवेश करने के बावजूद भैरहवा से दूर पडती थी लेकिन विगत दो वर्षों से निरंतर रेयूकाई शिक्षा का अभ्यास करने का मौका प्राप्त कर रही हूँ। रेयूकाई का मुख्य रुप से पूर्वज स्मरण करने का कार्य मुझे काफी पसंद आता है। अपने अग्रजों का स्वर्गवास होने के बाद पितृगण को मानना व समझना पडता है, इस बात से मैं पूरी तरह सहमत हूँ। मेरी माता का स्वर्गवास होने के कारण मेरे घर में सोकाईम्यो और माता जी का होम्यो दोनों विराजमान कराकर माता को दैनिक रुप से स्मरण करने व सूत्रपाठ चढाने का मौका प्राप्त कर रही हूँ। मैं अपने ३४ सदस्यों के घरों में भी सोकाईम्यो विराजमान कराने का मौका प्राप्त की हूँ। रेयूकाई शिक्षा के सम्बन्ध में स्वयं जानी गयी बातें बताकर ज्यादा से ज्यादा मिचिविकी कर, दोनों हाथ जोडकर पूर्वजों का स्मरण करने व सदस्य बनाने का मौका प्राप्त कर रही हूँ। मैं इस पवित्र संस्था को अपने मायके के रुप में देखती हूँ। पूर्वजों को मानने पर भगवान भी खुश होते हैं, इस बात पर मुझे पूरा विश्वास है। पूर्वजों के आशीर्वाद के कारण कई वर्षों से दूर रहे मेरे अपनो के साथ भी मुझे मिलने का मौका प्राप्त हुआ है। आध्यात्मिक संसार में बडी शक्ति होने के कारण पूर्वजों से आशीर्वाद एवं संरक्षण प्राप्त होने का महसूस करने का मौका प्राप्त कर रही हूँ। प्रत्येक माह की ९ व १८ तारीख के मासिक मिलन में सदस्यों के साथ-साथ जाया करती हूँ। १७वीं शाखा के मुख्य हाल में आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में भी सदस्यों को सहभागी बनाने का मौका प्राप्त कर रही हूँ एवं वह लोग भी यहां अग्रजों से सुनी हुई रेयूकाई शिक्षा सम्बन्धी बातों से काफी प्रभावित हुए हैं। अपने जीवन में पूर्वजों के आशीर्वाद से मैं खाना-पीना या अन्य किसी प्रकास को काई कष्ट नहीं झेली हूँ। रेयूकाई शिक्षा से भेंट होने के पहले मन में अशांति थी और यहां-वहां बेचैन होकर घूमने की स्थिति थी लेकिन मेरी ओया से भेंट होने के बाद मैं मिचिविकी कराकर विभिन्न मिलनों में सहभागी होती रही। सूत्रपाठ एवं कामना के बल से सचमुच आज मुझे शांति प्राप्त हुई है, आत्मबल बढा है और आज मैं परिवर्तित होकर आध्यात्मिक संसार में विश्वास करने वाला व्यक्ति बन गयी हूँ। चलें मिलियन का कार्यान्वयन कर अपने सदस्यों को भी कार्यान्वयन कराकर अभ्यास करने का मौका प्राप्त कर रही हूँ। मेरे अच्छे कर्म-सम्बन्धों के कारण २४ अगष्त २०१३ के गोहोम्यो आत्माग्रहण समारोह में सहभागी होकर १०० दिनों का अभ्यास करने का महान् मौका प्राप्त कर रही हूँ। १०० दिनों के अभ्यास को १०० दिनों में ही पूरा करने की प्रतिज्ञा करते हुए "यूराशिया रेयूकाई मेरा गौरव" की भावना लेकर अभ्यास कर परिणाम दिखाने की प्रतिज्ञा करती हूँ। धन्यवाद !

यूराशिया रेयूकाई की साफ-सफाई सम्बन्धी जानकारी एवं अपील

दिन-प्रतिदिन बिगडते जा रहे पर्यावरण के मद्देनजर यूराशिया रेयूकाई नियमित रुप में पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण नियंत्रण के लिए विभिन्न क्रियाकलाप करता आ रहा है। नेपाल, भारत, म्यानमार और बांगलादेश में रहने वाले रेयूकाई के अपने कार्यालय एवं लीडर्स, सदस्यों की सक्रियता में गोष्ठी, सेमिनार तथा सचेतनामूलक कार्यक्रमों का आयोजन एवं पंपलेट, प्रकाशित पोस्टरों के वितरण के साथ ही डोक्युमेन्ट्री प्रदर्शन एवं रैली आदि का आयोजन होता आ रहा है। इस अंक में सभी की जानकारी के लिए व्यक्तिगत एवं पर्यावरण की साफ-सफाई सम्बन्धी यूराशिया रेयूकाई की अपील भी प्रस्तुत की गयी है। सभी इसे व्यवहारिक रुप में लागू कर अपने रहने वाले घर, गांव, शहर-देश को स्वच्छ रखने हुए भावी संतति को एक उज्ज्वल भविष्य हस्तांतरित करें।

व्यक्तिगत साफ-सफाई:

व्यक्तिगत साफ-सफाई कहने पर शरीर के सभी अंगों को साफ करना है। मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए व्यक्तिगत साफ-सफाई पर ध्यान देना ही मुख्य बात है। अपने आस पास के वातावरण को साफ-स्वच्छ रखते हुए स्वयं को निरोग एवं स्वास्थ्य-स्तर बढाने के लिए व्यक्तिगत साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देखा जरुरी है। ऐसा करने से शरीर को विभिन्न रोगों से सुरक्षित रखा जा सकता है। व्यक्तिगत साफ-सफाई में निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान दें:

(१) माथा, दोनों आंख, दांत, नाखून, हाथ-पैर और पूरे शरीर की नियमित सफाई करें। (२) कपडों की साफ-सफाई करते हुए हमेशा साफ और सूखे कपडे पहनें। (३) खाना और पीने का पानी हमेशा स्वच्छ प्रयोग करें। (४) घर, कमरों एवं अपने आस-पास को हमेशा साफ-सुथरा रखें। (५) हमेशा शौचालय का प्रयोग किया करें।

साफ-सफाई सम्बन्धी अपील:

"साफ-सुथरा हो गांव शहर और घर-द्वार, यूराशिया रेयूकाई की यही पुकार"

१) अपने जन्म लेने वाले देश के प्रति, अपने रहने वाले समाज के प्रति कृतज्ञ होकर वातावरण स्वच्छ रखने के लिए साफ-सफाई के प्रति सचेत रहें।
२) आज का स्वयं बनकर आज से ही स्वयं अग्रसर होकर अपने घर-आंगन से साफ-सफाई प्रारंभ करें।
३) और कोई साफ कर देगा, ऐसा सोचकर इंतजार न करते हुए स्वयं शुरुआत करें।
४) युवा वर्ग स्वयं सक्रिय व समर्पित होकर औरों को भी उत्साहित कर साफ-सफाई में लगें।
५) जहां-तहां कूडा-गंदगी न फेंके। सडने वाली गंदगी को जमा कर खाद बनाकर प्रयोग करें। नहीं सडने वाली गंदगी को अलग जमा कर री-साईक्लिंग कर पुनः प्रयोग करें।
६) पर्यावरण संरक्षण एवं साफ-सफाई संबंधी कार्यक्रम प्रत्येक टोले-मोहल्ले, वार्ड, अपने रहने वाले क्षेत्र, कार्यालय, विद्यालयों में आयोजित करने में सहयोग करें।
७) प्लास्टिक जनित झोले आदि का प्रयोग न करें।

विभिन्न समय पर सम्पन्न क्रियाकलापों की झलकियां

यात्री प्रतीक्षालय, कठौना

बाल-बालिका मिलन, नारायणगढ

फेब्रिक पेन्टिंग प्रशिक्षण, नेपालगञ्ज

गुडिया बनाने का प्रशिक्षण, बुटवल

उद्घोषणा प्रशिक्षण का समापन, धोबीधारा

महिला मिलन, वितामोड

सिलाई-कटाई प्रशिक्षण, बर्दघाट

उद्घोषणा प्रशिक्षण, लक्ष्मीपुर

यूराशिया रेयूकाई संबंधी विस्तृत जानकारी के लिएः www.eurasiareiyukai.com